5 जनवरी 2025
मूल्य : 10.00 रुपये

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532
मासिक जागरण पत्रिका

भारत भूमि साधु-संतों की तपस्थली के रूप में जानी जाती है। आम जनता के लिए ये तप स्थल ही तीर्थ बन जाते हैं। ऐसे ही एक महान संत थे,भटयाण के श्री सियाराम बाबा,जो समरसता के महान पुजारी थे।

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पत्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

- HIGH PERFORMANCE CHIP
- MULTIPLE PROTECTION
- AUTOMATIC RECOGNITION
- LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL
- PWN CHARGE
- SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 जनवरी 2025 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : 04 अंक : 08
पौष शुक्ल – 6
युगाब्द ५१२६

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
राकेश दांगी
राजेश सोनी

मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी – 1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731–3551341
Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी – विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए – 11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी – 1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरुण सपकाले फोन नं. 0731–3551341

अपनी बात

ॐ

भारतवर्ष में ईश्वर का एकत्व विविध रूपों में साकार होता है। दुनिया की समस्त जाति एवं पथ के लोग यहाँ निवास करते है। वर्तमान में हिन्दु समाज को बाँटने और देश को तोड़ने का षड्यंत्र राष्ट्र विरोधी शक्तियाँ कर रही है। उनका षड्यंत्र सफल नही हो इसलिए आज सामाजिक समरसता होना अत्यन्त आवश्यक है। समरसता नही होने के कारण ही विगत इतिहास में हमे पराजय का मुह देखना पड़ा।

हिन्दु समाज जाति-बिरादरी, ऊँच-नीच व क्षेत्रीयता में विभाजित हो रहा है। अगड़े-पिछड़े के भेद खड़े हो रहे है। इन भेदों को समाप्त करना आवश्यक है। राष्ट्रीय एकता के लिए समाज का संगठित होना बहुत जरूरी है।

संपूर्ण समाज एक शरीर की तरह है। जब तक शरीर के सभी अंगो में सामंजस्य नही होगा तो शरीर स्वस्थ्य नही रहेगा। इसी प्रकार समाज में समरसता नही रहेगी तो और जाति-पाति में बंटा रहा तो वह समाज कमजोर होता जायेगा सक्षिप्त में कहे तो समरस समाज की समर्थ राष्ट्र का निर्माण करता है। राष्ट्र विरोधी शक्तियॉं तो चाहती है कि हिन्दू समाज जाति-पाति में बंटा रहे और उसकी इस कमजोरी का लाभ उठाकर अपने स्वार्थ सिद्ध करते रहे।

भारत वर्ष की उन्नति और विकास विरोध शक्तियों को खल रहा है। वो नही चाहते भारत वर्ष खुश हाल हो इसलिए जाति-पाति में बाँटने का षणयंत्र रच रहे है। इस समय हम सबको अत्यंत सावधान रहने की आवश्यकता है। जाति-पाति से ऊपर उठकर राष्ट्रहित में हम सब एक रहे यही हमारे उज्जवल भविष्य के लिये अनिवार्य है।

अलग-अलग बहती सरिताए
मिलकर बनता सिन्धु है
जाति-पाति है एक व्यवस्था
परिचय सबका हिन्दु है।

कुशल प्रशासक माँ अहिल्याबाई होल्कर: प्रेरणादायक व्यक्तित्व

रितिका लोधी

भारत के इतिहास में ऐसी कई महान विभूतियाँ हुई हैं, जिनकी शासन-नीति, कुशलता और दूरदर्शिता ने समाज को एक नई दिशा दी। उन्हीं में से एक हैं मां अहिल्याबाई होल्कर। उन्हें कुशल प्रशासक, धर्म संरक्षिका और प्रजा-हितैषी शासक के रूप में याद किया जाता है। 18वीं शताब्दी में उन्होंने मालवा साम्राज्य को जिस कुशलता से संचालित किया, वह आज भी एक मिसाल है।

उनका शासनकाल (1767-1795) न केवल मालवा के लिए, बल्कि पूरे भारत के लिए प्रेरणादायक था। अहिल्याबाई होल्कर का जन्म 1725 में महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के चौंडी गाँव में हुआ। उनके पिता माणकोजी शिंदे एक साधारण किसान थे, लेकिन उन्होंने अहिल्याबाई को धार्मिक और नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी। अहिल्याबाई की बुद्धिमत्ता और संवेदनशीलता बचपन से ही स्पष्ट थी। उनकी सादगी और करुणा ने मल्हारराव होल्कर को प्रभावित किया, जो मराठा साम्राज्य के एक प्रमुख सेनापति थे। उन्होंने अहिल्याबाई को अपने बेटे खंडेराव होल्कर के लिए वधू के रूप में चुना। विवाह के बाद उनका जीवन शांतिपूर्ण रहा, लेकिन खंडेराव होलकर की मृत्यु ने उनके जीवन को बदल दिया। उस समय अहिल्याबाई को सती होने से मल्हारराव ने रोका और उन्हें शासन और प्रबंधन की शिक्षा दी। इस शिक्षा ने उन्हें एक कुशल प्रशासक बनने की राह दिखाई।

राजनीतिक जीवन की शुरुआत - 1767 में मल्हारराव होल्कर और खंडेराव की मृत्यु के बाद अहिल्याबाई ने राज्य की बागडोर संभाली। एक महिला शासक के रूप में उनके सामने कई चुनौतियाँ थीं, लेकिन उन्होंने अपने कुशल नेतृत्व और प्रजा-हितैषी दृष्टिकोण से सभी को गलत साबित कर दिया। अहिल्याबाई ने एक संगठित और पारदर्शी शासन व्यवस्था स्थापित की। उन्होंने एक सलाहकार मंडल बनाया, जिसमें उनके प्रशासनिक निर्णयों में विशेषज्ञों का सहयोग लिया गया। वह व्यक्तिगत रूप से जनता की समस्याएँ सुनती थीं और त्वरित न्याय सुनिश्चित करती थीं। उनके दरबार में अमीर-गरीब सभी के लिए समान स्थान था। उनके शासनकाल में मालवा में सड़कों, घाटों, तालाबों और कुओं का निर्माण बड़े पैमाने पर किया गया।

अहिल्याबाई के द्वारा बनवाए गए मंदिर और धार्मिक स्थल आज भी उनकी दूरदर्शिता का प्रमाण हैं। उन्होंने काशी विश्वनाथ मंदिर वाराणसी और महेश्वर के प्रसिद्ध मंदिरों का पुनर्निर्माण करवाया। अहिल्याबाई ने अपने शासनकाल में प्रजा के कल्याण को सर्वोपरि रखा। उन्होंने गरीबों और बेसहारा लोगों के लिए अन्न-क्षेत्र, धर्मशालाएँ और अस्पताल स्थापित किए। अकाल और बाढ़ जैसी आपदाओं के समय उनकी राहत योजनाएँ बेहद प्रभावी रहीं। उन्होंने व्यापारियों और किसानों के लिए भी कई कल्याणकारी नीतियाँ बनाई। अहिल्याबाई अपने राज्य में न्यायप्रियता के लिए जानी जाती थीं। उनका न्यायालय सभी के लिए खुला था, और वे स्वयं कई मामलों का निपटारा करती थीं। सैन्य दृष्टि से भी उन्होंने राज्य को मजबूत रखा। उन्होंने एक कुशल सेना का गठन किया, जो राज्य की सीमाओं की रक्षा में सक्षम थी।

अहिल्याबाई की नेतृत्व क्षमता- अहिल्याबाई का शासन प्रजा की समस्याओं को सुनने और उनका समाधान करने पर केंद्रित था। उनकी करुणा और संवेदनशीलता ने उन्हें प्रजा में बेहद लोकप्रिय बना दिया। उनकी नीतियाँ केवल तत्कालीन समस्याओं को हल करने तक सीमित नहीं थीं, बल्कि उन्होंने राज्य के दीर्घकालिक विकास और स्थिरता पर ध्यान केंद्रित किया। चाहे प्राकृतिक आपदा हो या राजनीतिक संकट, अहिल्याबाई ने हर स्थिति का कुशलतापूर्वक सामना किया। उनकी नीतियाँ आज भी प्रेरणा देती हैं।1795 में अहिल्याबाई होल्कर का निधन हुआ, लेकिन उनकी विरासत आज भी जीवित है। उनके द्वारा निर्मित संरचनाएँ, नीतियाँ और उनकी न्यायप्रियता उन्हें हमेशा अमर बनाए रखेगी। महेश्वर में स्थित उनकी समाधि और उनकी मूर्तियाँ उनकी महानता की गवाह हैं।

राज्य के अभिलेख अनायास ही देवी द्वारा प्रदर्शित कूटनीतिक और प्रशासनिक कौशल को प्रकट करते हैं। उन्होंने इंदौर को एक प्रगतिशील शहर में बदल दिया और उद्योगों और विश्वविद्यालयों का निर्माण किया। भारत सरकार ने 200 वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में 25 अगस्त 1996 को एक डाक टिकट जारी किया। इंदौर हवाई अड्डे का नाम देवी अहिल्याबाई होलकर के नाम पर रखा गया। इंदौर शहर ने विश्वविद्यालय का नाम देवी अहिल्या विश्वविद्यालय रखा। न केवल अपने राज्य में बल्कि वास्तव में भारत के अन्य हिस्सों में गतिविधियों को बढ़ावा देने का श्रेय उनको दिया जाता है।

सामाजिक समरसता के सूत्रधार - प्रभु श्रीराम और रामजन्मभूमि मन्दिर

डॉ. सुब्रतो गुहा

भारत के सनातन हिन्दू समाज को समरसता के सूत्र में जोड़ने वाले प्रमुख तत्वों में एक अतिमहत्वपूर्ण तत्व है - प्रभु श्रीराम के प्रति श्रद्धा, भक्ति एवं प्रेम। किसी सनातन हिन्दू घर में जब किसी शिशु का जन्म होता है - तब रिश्तेदार एवं परिचित बधाई देने घर पहुँचकर कहते हैं - देखो रामजी की कृपा से कितने सुन्दर शिशु का जन्म हुआ है। जब आयु बढ़ने पर वही शिशु युवा बनकर विवाह सूत्र में बंधता है - तब वही रिश्तेदार एवं पड़ौसी बधाई देने घर पहुँचकर कहते हैं - देखो कितनी सुन्दर राम-सीता जैसी जोड़ी है। वृद्धावस्था तक पहुँचने तक वह समाज में **राम-राम** कहकर सभी का अभिवादन करता है। फिर एक दिन जब उसके शरीर से प्राण निकल जाता है - तब चार कंधों पर सवार उसके प्राणहीन शरीर के पीछे चलने वाले सभी लोग राम के नाम को सत्य घोषित करते हुए चलते हैं। यह कहानी केवल ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं अनुसूचित जाति या जनजाति की नहीं हैं - बल्कि सनातमधर्मी सभी जातियों की है - **राम सभी के मन में है, राम जन्म में, राम मरण में, राम बसा कण-कण में है।**

जब-जब किसी सनातनी हिन्दू के मन में जातिगत ऊँच-नीच का भाव जाग्रत होता है - तब-तब उसके मन में यह विचार भी उभरता है कि वो दूसरी जाति वाला व्यक्ति भी तो मेरे ही जैसा रामभक्त है - जब मेरे और उसके प्रभु एक ही हैं - तो हम दोनों में कोई ऊँचा या नीचा कैसे हो सकता है ? रामभक्ति सभी को समरसता के सूत्र में जोड़ती है। रामजी के मन्दिर में दर्शन करते समय किसी भी भक्त के मन में यह प्रश्न नहीं उठता कि मेरे पास खड़े व्यक्ति किस जाति का है, मुझसे ऊँचा या नीचा है। यही बात अयोध्या के श्री रामजन्मभूमि मन्दिर में रामभक्त दर्शनार्थियों में सन् 1528 तक देखने को मिली - और जब सन् 1528 में मुगल शहंशाह बाबर के सेनापति मीर बाकी ने हजारों रामभक्तों के बलिदान के बाद उस भव्य श्रीरामजन्मभूमि मन्दिर को तोड़कर वहाँ बाबरी ढ़ाँचे का निर्माण किया - तब इसकी पीड़ा सभी जातियों के रामभक्तों ने अनुभव की एवं सभी ने मिलकर संघर्ष जारी रखा। चार लाख रामभक्तों के बलिदान हुए - जिसमें सभी जाति के रामभक्त शामिल थे। आखिरकार दिनांक 22 जनवरी 2024 को वह ऐतिहासिक क्षण

आया जब अयोध्या में बाबरी ढाँचे की जगह भव्य श्रीरामजन्मभूमि मन्दिर का निर्माण संपन्न होकर प्रभु श्रीराम की भव्य प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा हुई। अलौकिक आनन्द का संचार सभी जातियों के हिन्दुओं के हृदय में हुआ- और अनायास ही सभी के मुँह से समवेत स्वर में उद्घोष हुआ - जय श्री राम। राम आ गए और सभी जातिगत भेद मिट गए - सभी ने अनुभव किया, गर्व से कहो हम हिन्दू हैं - वही स्वामी विवेकानन्द का कालजयी अमर उद्घोष।

ऐसा ही राममय समरस वातावरण अयोध्या में 4 नवंबर 1989 को भी था जब विश्व हिन्दू परिषद की अगुवाई में लाखों रामभक्तों की उपस्थिति में भव्य श्रीरामजन्मभूमि मन्दिर का शिलान्यास कार्यक्रम संपन्न हुआ। उस दिन भव्य श्रीरामजन्मभूमि मन्दिर निर्माण हेतु प्रथम ईंट रखी बिहार प्रदेश के 35 वर्षीय दलित युवक कामेश्वर चौपाल ने जबकि ब्राह्मण पंडित वैदिक मंत्रोच्चार कर रहे थे एवं क्षत्रिय, वैश्य सहित समस्त हिन्दू भक्तजन राम भक्ति में भावविभोर थे। सनातनधर्मियों की समरसता का वह एक अद्भुत क्षण था। प्रत्येक गाँव, कस्बे, शहर में राम मन्दिर एवं बजरंगबली मन्दिर सभी जातियों के हिन्दुओं का एकत्रीकरण स्थल है - जहाँ मन्दिर की छत तले सभी ऊँच-नीच के भाव से मुक्त होकर समरसता के सूत्र में बंध जाते हैं - रामजी हमारे हम रामजी के। सनातन हिन्दू समाज को शक्तिशाली करने हेतु एक संदेश -

राम का सुमिरन किया करो, प्रभु के सहारे जिया करो,
जो दुनिया का मालिक है, नाम उसी का लिया करो।

वल्लभाचार्य

मध्यकाल में जब हिन्दू समाज जातियों के भेद से कमजोर हो रही थी, तब दक्षिण भारत में जन्में वल्लभाचार्यजी ने समाज में समरसता के लिये दक्षिण से उत्तर की यात्रा की और भगवद् भक्ति का संदेश प्रचारित किया।

एक बार भगवद्भक्ति के प्रचार के दौरान वल्लभाचार्य जब वृंदावन की ओर आ रहे थे, तभी रास्ते में उन्हें एक रोते बिलखते सूरदास दिखे। वल्लभाचार्यजी ने पूछा, **रिरिया क्यों रहे हो तुम? कृष्ण लीला का गायन क्यों नहीं करते?** सूरदास बोले- **मैं अंधा क्या जानूं लीला क्या होती है?** यह सुनकर वल्लभाचार्य ने सूरदास के मस्तक पर अपना हाथ रख दिया। कहते हैं कि उनके इस दिव्य स्पर्श से श्रीकृष्ण की सभी बाललीलाएं सूरदास की बंद आंखों के सामने तैर गयीं। महाप्रभु वल्लभ उन्हें वृंदावन ले लाए और श्रीनाथ मंदिर में होने वाली आरती के क्षणों में हर दिन एक नया पद रचकर गाने का सुझाव दिया। इन्हीं सूरदास के हजारों पद **सूरसागर** में संग्रहीत हैं। इन पदों का रस आज भी श्रीकृष्ण भक्तों के बीच प्रेम की निर्मल काव्यधारा के रूप में प्रवाहित हो रहा है।

उन्होंने इस्लामिक सत्ता व बर्बर धर्मान्तरण के खिलाफ हिन्दू धर्म रक्षार्थ अलख जगाया और घर वापसी के सूत्र को मजबूती प्रदान की।

उनका भक्ति मार्ग पुष्टिमार्ग तथा शिष्य पुष्टिमार्गी कहलाये, उस समय समाज में छुआ-छुत एवं उच-नीच के भाव का खंडन कर, उन्होंने सामाजिक समरसता का भाव बनाया। शुद्धाद्वैत मत का प्रवर्तन कर बिना किसी भेद-भाव के सभी हिन्दुओं को उन्होंने भक्ति का अधिकारी घोषित कर दिया और सभी वर्गों से शिष्य बना उदाहरण प्रस्तुत किया।

संत रैदास की सीख

समाज सुधारक तथा समरसता के संवाहक संत रैदास या रविदास का जन्म वाराणसी के निकट मडुआडीह के चर्मकार परिवार में माघ पूर्णिमा विक्रम संवत 1433 (1376 ईस्वी) को हुआ। गृहस्थ जीवन और जूते बनाने का काम करते हुए आपने जातिगत भेदभाव को झुठा बताया और भगवान की भक्ति के द्वारा जातिगत भेदभाव को झुठा बताया। उन्होंने सिकन्दर लोधी के प्रलोभनों व दबाल का विरोध कर अपनी हिन्दू धर्म मे श्रद्धा निष्ठा तथा आस्था व्यक्त की। प्रभु तुम चंदन हम पानी। जाकी अंग अंग बास समानी।

प्रभुजी तुम घन वन हम मोरा। जैसे चितवत चंद चकोरा।।
प्रभुजी तुम दीया हम बाती। जाकी जोति बरै दिन राती।।
प्रभु तुम मोती हम धागा। जैसे सोनहि मिलत सोहागा।।
प्रभुजी तुम स्वामी हम हास। ऐसी भक्ति करे रैदास।।

हमारी बातचीत

प्रिय पाठकों ,

अगले माह से आपकी अपनी पत्रिका जागृत मालवा में एक नया स्तम्भ हमारी बातचीत प्रकाशित होगा। इस स्तम्भ में आपके सुझाव और मन की बात प्रकाशित करेंगे। आप अपने सुझाव, मालवा-निमाड़ से जुड़ी बातें और समसामयिक विषयों पर अपनी बात व्हाट्सएप, ई-मेल या पत्र के माध्यम से भेज सकते है। आप पत्रिका के लिए सुझाव और अपने मौलिक विचार भी लिख कर भेज सकते हैं, जिनकी सहायता से हम जागृत मालवा को और अधिक अपनी बना सकेंगे।

आपके चयनित पत्रों को हम इस स्तम्भ में प्रकाशित भी करेंगे।

व्हाट्सएप - 9977712561
ईमेल - jagrutmalwa@gmail.com
पता -विश्व संवाद केन्द्र, अर्चना, 76 रामबाग, इन्दौर

सामाजिक संरचना

सामाजिक संरचना का तात्पर्य समाज के विभिन्न तत्वों, समूहों और संस्थाओं के बीच स्थापित संबंधों और उनके द्वारा निभाई जाने वाली भूमिकाओं के ढांचे से है। यह एक ऐसी प्रणाली है जो समाज के सभी घटकों को आपस में जोड़ती है और उन्हें एक सुव्यवस्थित रूप देती है। सामाजिक संरचना समाज के विकास, स्थिरता और संतुलन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

(सामाजिक संरचना के घटक)

1. व्यक्ति और उनकी स्थिति - सामाजिक संरचना में व्यक्ति सबसे महत्वपूर्ण घटक है। समाज में हर व्यक्ति की एक विशिष्ट स्थिति होती है, जो उसके कार्य, भूमिका और संबंधों को परिभाषित करती है। उदाहरण के लिए, परिवार में एक व्यक्ति का पिता, पुत्र या भाई के रूप में एक स्थान होता है।

2. सामाजिक समूह - समाज विभिन्न समूहों का संग्रह है। ये समूह प्राथमिक (जैसे परिवार) और द्वितीयक (जैसे कार्यस्थल या संगठन) हो सकते हैं। समूहों के माध्यम से व्यक्ति अपनी जरूरतों को पूरा करता है और समाज में अपनी भूमिका निभाता है।

3. संस्थाएँ - समाज में शिक्षा, धर्म, राजनीति, अर्थव्यवस्था, और विवाह जैसी संस्थाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये संस्थाएँ समाज को व्यवस्थित करने और उसमें अनुशासन बनाए रखने में मदद करती हैं।

4. मानदंड और मूल्य - सामाजिक मानदंड और मूल्य समाज के सदस्यों के आचरण को नियंत्रित करते हैं। ये समाज में सही और गलत के बीच भेद करने में मदद करते हैं। उदाहरण के लिए, ईमानदारी, न्याय और सहिष्णुता जैसे मूल्य समाज में स्थिरता बनाए रखते हैं।

5. संस्कृति और परंपराएँ - संस्कृति और परंपराएँ सामाजिक संरचना का अभिन्न हिस्सा हैं। ये समाज के विभिन्न पहलुओं, जैसे भाषा, धर्म, रीति-रिवाज और कला को परिभाषित करती हैं।

(सामाजिक संरचना का महत्व)

1. सामाजिक स्थिरता - सामाजिक संरचना समाज में अनुशासन और स्थिरता बनाए रखने में मदद करती है। यह समाज के विभिन्न वर्गों के बीच संतुलन स्थापित करती है।

2. सामाजिक विकास - यह समाज के विकास और प्रगति के लिए एक आधार प्रदान करती है। नई तकनीकों, विचारों और परिवर्तनों को समाज में समाहित करने के लिए यह एक मंच प्रदान करती है।

3. सामाजिक पहचान - सामाजिक संरचना व्यक्ति को

उसकी पहचान प्रदान करती है। यह उसके अधिकारों और कर्तव्यों को स्पष्ट करती है।

4. सामाजिक समरसता - यह समाज के विभिन्न वर्गों, समूहों और व्यक्तियों के बीच समरसता और सह-अस्तित्व को बढ़ावा देती है।

(निष्कर्ष)

सामाजिक संरचना समाज का आधारभूत ढांचा है, जो व्यक्तियों और समूहों के बीच संबंधों को व्यवस्थित करती है। यह समाज की स्थिरता, विकास और अनुशासन को बनाए रखने में सहायक है। इसके बिना समाज में अव्यवस्था और असंतुलन उत्पन्न हो सकता है। अतः सामाजिक संरचना को समझना और इसे सुदृढ़ करना समाज की प्रगति और समृद्धि के लिए आवश्यक है।

मालवर्तन - मालवर्तन वह स्थिति है, जब व्यक्ति या समूह समाज के स्थापित मानदंडों और मूल्यों का उल्लंघन करता है। यह समाज में अराजकता और परिवर्तन दोनों ला सकता है।

(मालवर्तन के प्रकार)

1. सकारात्मक मालवर्तन - जब समाज के नियमों को सुधारने के लिए मालवर्तन किया जाता है, जैसे सामाजिक सुधार आंदोलन।

2. नकारात्मक मालवर्तन - जब कोई आचरण समाज में अस्थिरता या हानि पहुंचाता है, जैसे चोरी, हत्या, या भेदभाव।

(कारण)

1. आर्थिक असमानता - गरीबी और बेरोजगारी के कारण अपराध बढ़ सकते हैं।

2. सामाजिक भेदभाव - जाति, धर्म और लिंग के आधार पर भेदभाव।

3. मनोवैज्ञानिक कारक - मानसिक तनाव और अस्थिरता।

4. संरचनात्मक विसंगतियाँ - जब समाज की संरचना में असमानता होती है।

(प्रभाव)

1. नकारात्मक प्रभाव - समाज में अस्थिरता, असंतोष और अराजकता।

2. सकारात्मक प्रभाव - समाज में सुधार और नए विचारों के उदय का कारण बनता है।

(सामाजिक संरचना और मालवर्तन का संबंध)

सामाजिक संरचना और मालवर्तन एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। जहाँ सामाजिक संरचना समाज में स्थिरता और अनुशासन बनाए रखती है, वहीं मालवर्तन समाज में सुधार और परिवर्तन लाने का माध्यम बन सकता है। मालवर्तन सामाजिक संरचना की कमजोरियों और विसंगतियों को उजागर करता है, जिससे समाज अपने नियमों और ढांचे को और अधिक प्रभावी बना सकता है।

(निष्कर्ष)

सामाजिक संरचना और मालवर्तन दोनों समाज के महत्वपूर्ण पहलू हैं। सामाजिक संरचना जहाँ समाज को संगठित और व्यवस्थित करती है, वहीं मालवर्तन समाज को परिवर्तन और सुधार की दिशा प्रदान करता है। इन दोनों का अध्ययन समाज को बेहतर और समावेशी बनाने में मदद करता है।

मालवा की धड़कन

शीला चंदन (इंदौर)

सौम्य सिंचित माटी मालवा की
खुश्बू चंदन सी देती है।
सुन्दर और सुवासित धरती
हर जन की पिर हर लेती है।
मां नर्मदा, क्षिप्रा,रेवा
जिसके पद रज वरण किये।
महादेव जहां स्वयं विराजे
स्वयंभू रुप धारण किए।
तपोभूमि ऋषियों मुनियों की
वीरों की संसाधन है।
कला जहां प्रतिष्ठित होकर
हर दिल का करती अभिवादन है।
इस माटी की गौरव माता
देवी अहिल्या मान करें।
जिनके तप संयम के बल पर
होलकर वंश अभिमान करें।
शिव योगिनी सरला महादानी
न्याय प्रेम की माता है।
देवी, यह मालवा की धड़कन
मर्यादा की अधिष्ठाता है।
इंदुर की सिंदुरी सुबह
मालवा की शीतल शाम है।
हे! मातृ रूप ,हे सौम्यशिला तुम
तुमको कोटि प्रणाम है।

बाबा रामदेव जी का यह मंदिर

स्व. लक्ष्मीदेव जेलिया

बाबा रामदेव जी का यह मंदिर मल्हारगढ़ जिला मंदसौर मध्यप्रदेश में स्थित है। इसे मालवांचल का रामदेवरा भी कहते हैं। बाबा रामदेव के भक्त श्री लूणदास जेलिया निवासी राजाजी का करेडा (राजस्थान) व्यथित होकर चलते-चलते परिवार सहित जावरा स्टेट मल्हारगढ़ आ बसे यहाँ विधि-विधान से बाबा की पूजा-अर्चना करते रहे। यहाँ बाबा की भक्ति करते देख रामदेव स्वयं प्रकट हुए तथा कहा लूणदास क्या कर रहा है, श्वेत घोड़े पर सवार बाबा को देख भक्त लूणदास जावरा नवाब का कारिंदा समझ पांव पकड़ लिये। बाबा रामदेव ने लूणदास से कहा रोज तुम मेरे चरण पड़ते हो अब तो छोड़। फिर बाबा रामदेव ने कहा कि जिसकी तू पूजा करता है मैं स्वयं बाबा रामदेव हूँ। भक्त लूणदास को विश्वास नहीं हुआ, तब बाबा रामदेव ने कहा मारवाड़ तथा गुजरात में तो मेरे कई भक्त हैं, मालवा में तेरे बराबर कोई भक्त नहीं है। इस अंचल में मेरी पूजा का प्रचार तू ही करेगा। मेरी पूजा का प्रचार-प्रसार सही रूप से कर। तब बाबा ने उपदेश दिया और कहा कि मैं तुझे बताता हूँ वैसा कर, लूणदास ने सुना तो हैरत में पड़ गये, कहा मेरी इतनी सामर्थ्य कहां मैं अपने घर पर आपकी पूजा करता हूँ, वही बहुत है। तब बाबा ने कहा यहां से 1 कोस दूर पर जो भी पहाड़ी (मगरा) आये, वहां मेरे चरणकमल मिलेंगे तथा 8-9 फीट खुदाई करना, पूजा अर्चना की सारी सामग्री जमीन में मिलेगी।

भक्त लूणदास ने डरते हुए ग्राम के पटेल तथा ग्राम के वरिष्ठजनों को यह बात कही। भक्त की सादगीपूर्ण दिनचर्या एवं पूजा-अर्चना से गांव के जन वैसे ही प्रभावित थे। भक्त की बातों पर पूर्ण विश्वास कर गांव के नर-नारी द्वारा ढोल-नगाड़ों के साथ बताई गई जगह जेलिया पारा (मगरा) पर खुदाई की गई। लगभग साढ़े आठ फीट खुदाई करने के बाद बाबा रामदेव के चरणकमल, शंख, घडियाल आदि सामग्री निकली वो ही चरणकमल आज मंदिर में विराजमान हैं एवं चबूतरा बनाकर उक्त सामग्री की पूजा-अर्चना करते-करते यहां दीन-दुखियों की मुरादें पूर्ण होने लगीं। अंधों की आंखें खुलने लगीं, बांझों को पुत्ररत्नों की प्राप्ति होने लगी। हजारों पालने प्रतिवर्ष बंधने लगे। बीमारी, व्याधियां समाप्त होने लगीं तथा रोज मेला सा लगने लगा। यात्रियों हेतु स्नान आदि के लिए कुईयां खुदाई गई। केवल सोलह हाथ गहाराई पर कुईयां में स्रोत निकला तथा अथाह पानी केवल 4-4 फीट चौड़ी कुईयां में रहने लगा। भक्तों की मुरादें, व्याधियां इस पानी से दूर होने लगीं। जिसका प्रचार-प्रसार मालवा अंचल, मेवाड़ में होने लगा तथा रामदेवरा के नाम से मल्हारगढ़ माना जाने लगा और बाबा रामदेव ने स्वयं बाबा लूणदास की भक्ति से प्ररित होकर जीवित समाधि लेने हेतु भक्त लूणदास को सपने में आकर आदेश प्रदान किया। आदेशानुसार भक्त लूणदास से संपूर्ण समाज और नगरवासियों के समक्ष जीवित समाधि ली। समाधि लेने के पश्चात् मंदिर की और महिमा बढ़ने लगी। पूरे भादवमास में मेला भराने लगा तथा दूर-दराज से भक्त पैदल यात्रा कर आने लगे तथा अपने मन की मुरादें पाने लगे। संपूर्ण हिन्दुस्तान के प्राचीन मंदिरों में इस मंदिर का तीसरा स्थान है तथा मेवाड़ मालवांचल का प्रथम प्राचीन मंदिर है। उक्त मंदिर का दो बार पूर्व में जीर्णोद्धार हो चुका है। वर्तमान स्थित मंदिर की कुईयां का पानी खारा रहता है तथा

भादवमास में मेले के समय मीठा हो जाता है इतनी कम गहराई तथा कम चौड़ी कुईयां का पानी कभी सूखता नहीं। सैकड़ों वर्षों से आज पर्यंत किसी ने पानी सूखते हुए नहीं देखा।

उक्त मंदिर पर अनेक चमत्कार समय-समय पर होते रहे हैं एक बार ग्रामवासियों की मनगढ़ंत शिकायतों पर तत्कालीन जावरा नवाब स्वयं मंदिर पर आए तथा पुजारी को भला बुरा कहते हुए जूते सहित मंदिर की सीढ़ी पर चढ़ने लगे। बाबा के चमत्कार ने तुरन्त उन्हें अंधा कर दिया तत्पश्चात पुजारी द्वारा बाबा की अरदास करने पर नवाब के कुईयां के पानी से स्नान करने के बाद ही उनकी आंखों की रौशनी लौटी। तब नवाब ने पुजारी से कहा बोलो मंदिर के लिए क्या आवश्यकता है तब पुजारी ने बताया कि मुझे मंदिर के लिए कुछ नहीं चाहिये सब बाबा पूर्ति करते हैं। मंदिर पर एक बार चोरी हुई तथा मंदिर के सारे सोने-चांदी के जेवरात लूट कर चोर ले गये वे एक कोस भी नहीं जा पाए और सबके सब अंधे हो गये। पुनः मंदिर की साम्रगी जेवराज मंदिर पर स्थापित करने के बाद ही उनकी आंखों की रौशनी लौटी। आज भी भादवा सुदी एकम, बीज तथा तीज का तीन दिवसीय मेला सैकड़ों वर्षों से मंदिर परिसर लगता चला आ रहा है तथा बाबा का चल समारोह निकलता है। मंदिर परिसर की व्यवस्था बाबा लूणदासजी जेलिया के वंशज पन्द्रह पीढ़ी से करते चले आ रहे हैं तथा वर्तमान में गांव में मेले की व्यवस्था नगर पालिका द्वारा संचालित की जाती है। आज बाबा रामदेवजी के गांव-गांव मंदिर हैं परन्तु उक्त मंदिर जैसा कोई चमत्कारी एवं प्राचीन मंदिर नहीं है। यह मंदिर आज जीर्णोद्धार की बाट जोह रहा है।

बांग्लादेशी हिंदू के साथ

स्वदेश

लालबाग से कलेक्टर कार्यालय तक निकली ऐतिहासिक

बांग्लादेश हिंसा के खिलाफ आक्रोशित हिन्दुओं ने दिखाई एकजुटता

स्वैच्छिक रूप से दुकानें बंद रखीं

बड़वानी भास्कर 05-12-2024

में हिन्दू समाज, मंदिर व संपत्ति की सुरक्षा करें सरकार

स्वदेश

बांग्लादेशी हिंदू के साथ, भारत के हर हिंदू का हा

हिंदुओं की प्रताड़ना को रोको वरना वैश्विक हिंदू समाज कड़ा प्रत्युत्तर दे

संत-महात्माओं व समाज के वरिष्ठजन उपस्थित थे मंच पर

निक इंदौर संकेत

देश के हिन्दुओं को बचाने के लिए एक इंदिरा की ओर जरूरत

इंदौर बंद, उमड़ा जनसैलाब

दैनिक भास्कर देवास

बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो र
के विरोध में नगर में निकाली

भारत के हर हिंदू का हाथ

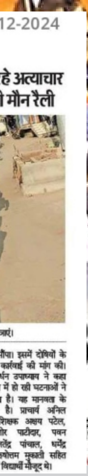

इंदौर, बुधवार, 04 दिसंबर 2024

खुलासा फर्स्ट
पक्का इंदौरी अखबार

आक्रोश की अभिव्यक्ति, वक्त से पहले ठसाठस हुआ ल

नितिन मोहन शर्मा
94250-56033

संत सियाराम बाबा

जयशंकर शर्मा

जिनके जीवन और श्वासों की प्रेरणा तथा संजीवनी नर्मदा मैय्या रही, ऐसे सियाराम बाबा ने संसार में भक्ति का परमपद प्राप्त किया। विरक्ति और भक्ति जिनके दर्शन मात्र से उत्पन्न होती है, ऐसी माँ नर्मदा ने सियाराम बाबा को वर्षों तक अपना आश्रय, आशीर्वाद और आँचल प्रदान किया।

मुंबई में जन्में सियाराम बाबा की जीवन यात्रा में माँ नर्मदा और श्रीरामचरितमानस सदैव साथ रहे। बारह वर्षों तक मौन साधना करने के बाद अपने मुख से **'सियाराम'** शब्द निकलने के बाद आप **सियाराम बाबा** कहलाये।

दस वर्षों तक **खड़ेश्वरी साधना** में आपने कठोर तप किया। इस तप में सोने, जागने सहित हर काम खड़े रह कर किया, नर्मदा में बाढ़ आने पर भी आप खड़े रहे, माँ नर्मदा का जल नाभितक आया और माँ स्नेह का स्पर्श देकर लौट गयी।

सदैव रामनाम जाप करते सियाराम बाबा को कोई कुछ भी दे, वे मात्र दस रूपये नर्मदा परिक्रमावासियों के लिये रखते और उसी से सदाव्रत की व्यवस्था करते। परिक्रमावासियों में स्वयं चाय पिलाते, दाल, चावल आदि की व्यवस्था करते।

भट्यान (खरगोन) में अपनी कुटिया के पास का क्षेत्र डूबक्षेत्र घोषित हुआ, सरकार ने दो करोड़ इक्यावन लाख रूपये दिये, बाबा ने ये राशि नांगलवाडी के नागदेवता के मंदिर निर्माण के लिये दे दिये। अयोध्या में श्रीरामलला मंदिर निर्माण के लिये निधिसंग्रह में बाबा का उदार आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

श्रीरामचरितमानस के अनवरत पारायण से निर्मल मन वाले सियाराम बाबा का सत्संग लाखों भक्तों को मिलता रहा। अपने आश्रम के द्वार ग्रामीण-नगरीय और सभी जातियों के लोगों के लिये सदैव खुले रखने वाले सियाराम बाबा का वात्सल्य् पशु-पक्षियों को भी मिलता रहा। आपकी कुटिया सामाजिक समरसता का जीवन्त केन्द्र है। सियाराम बाबा का जीवन लाखों परिवारों में भक्ति की अजस्त्र धारा बहा रहा है। सियारामबाबा के जीवन से नर्मदा की सेवा और सादगीपूर्वक जीवन की प्रेरणा सभी के लिये वरेण्य है। ऐसे समदर्शी सियारामबाबा को सादर नमन तपस्वी संत सियाराम बाबा के चरणों में प्रमाण विनम्र श्रद्धांजलि।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

हमारी सामाजिक समरसता का अर्थ

दुर्गेश कुमार साध

भारतीय समाज एक बहुआयामी, बहुभाषी समाज होते हुए भी सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय रूप से एक रहा है। उत्तर से लेकर दक्षिण एवं पूर्व से लेकर पश्चिम तक हमारे समाज में भले ही बाह्य तौर पर विविधता दिखती हो, मगर तात्विक रूप से हम सभी एकता की अदृश्य डोरी से बँधे हुए हैं। यह डोरी है - राष्ट्र की। यह डोरी है - धर्म की। यह डोरी है - संस्कृति की। हम सभी उस राष्ट्र रूपी माला के मनके हैं, जिसकी डोरी हमारी एकात्मिक संस्कृति है।

भारत चूँकि विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता है, इसलिए एकात्मता के सूत्र इसी धरती से निकले और विश्व के प्रत्येक कोनों में गये। विश्व में एकमात्र हमारा ही धर्म है, जो कि केवल मानव-मात्र के लिए है। बाकी के धर्म, एक कम्यूनिटी विशेष के लिए ही है। जहाँ दूसरे धर्म केवल उन्हीं के मज़हब या रिलीजन को मानने वालों के भले की बात करते हैं एवं केवल उन्हीं को स्वर्ग का उत्तराधिकारी स्वीकार करते हैं, वहीं हिन्दू धर्म सार्वभौमिक है, इस धरती पर रहने वाले प्रत्येक मनुष्य के कल्याण की बात करता है, उसकी कामना करता है। हमारे धर्म में चूँकि प्रचार की परंपरा नहीं रही, इसलिए हमारे यहाँ के मनीषी विश्व-भ्रमण पर गये तो अवश्य, मगर कन्वर्जन के इरादे से नहीं, बल्कि विश्व को भारतीय ज्ञान परंपरा के दर्शन करवाने के मनोयोग से। इसके विपरीत भारतवर्ष में अनेकों मत, संप्रदाय, मज़हब एवं रिलीजन के प्रचारक आते रहे और जब वे भारतीय जन मानस पर अपेक्षित प्रभाव उत्पन्न नहीं कर पाए, तो छल-कपट एवं लोभ के द्वारा कन्वर्जन में कुछ हद तक सफल भी रहे, मगर सनातन हिन्दू धर्म की जड़ें इतनी भी नाजुक नहीं थी कि थोड़े-से धक्के से इसके पेड़ों की शाखाएं टूट कर अलग हो जाएं, इसलिए अन्य मजहब इसका अब तक इसका उपाय नहीं निकाल पाए, वर्ना भारत पर अब तक जितने आक्रमण हुए हैं, यह देश अनेकों बार, अनेकों मतों में मतांतरित हो जाता। **कोई तो बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन दौरे-जहाँ हमारा** - यह हमारा अहंकार की नहीं है, बल्कि हमारी सामाजिक समरसता का उदाहरण है।

श्वेताश्वतरोपनिषद में कहा गया है - **अमृतस्य पुत्रा वयं।** अर्थात् हम सब अमृतमय अविनाशी ईश्वर की संतानें हैं। ईश्वर ने हमें बनाने में कोई भेद नहीं किया, तो हम कौन होते हैं - भेद करने वाले? हममें रक्त, अस्थि, मज्जा एवं आत्मादि रूप में कोई भेद नहीं है। आदि शंकराचार्य जी के जीवन की एक कथा में एक प्रसंग आता है कि वे गंगा में स्नान कर बाहर निकले थे कि किसी ने उन्हें छू लिया, जिससे वे क्रोधित हो गये। परंतु वे जिस व्यक्ति द्वारा छुए गये थे, उसने उनसे प्रतिप्रश्न किया कि मेरे व आपके शरीर में आखिर क्या भेद है, बतलाईये। मेरा खून, मॉस एवं हड्डी भी वही है, जो आपकी है। मैं भी मिट्टी से बना हूँ और आप भी मिट्टी से बने हैं, तो मिट्टी-मिट्टी को छुए, तो क्या हानि है? और अगर मेरी आत्मा में आपकी आत्मा को छुआ है, तो आत्मा तो पवित्र-अपवित्र भी नहीं होती है। कहते हैं कि शंकराचार्य उनके सामने झुके और जब उठे, तब तक वे अदृश्य हो चुके थे। इसका अर्थ यह है कि स्वयं शंकर भगवान ने **'तथाकथित शूद्र'** रूप धरकर उन्हें यह आभास करवाया था कि मानव-मानव में कोई भेद हो नहीं हो सकता।

यही हमारा दर्शन है, यही हमारा धर्म है। आज के समय में हिन्दुओं पर बौद्धिक हमलों की बाढ़ आई हुई है। वे कभी वर्ण व्यवस्था के नाम पर, तो कभी जातियों के नाम पर हम में विभेद पैदा करने के लगातार प्रयास करते आ रहे हैं। आने वाले समय में ये हमले और तीव्र होंगे, ऐसी स्थिति में हमें अपने धर्म का आधार लेकर उनसे निपटना पड़ेगा। **'कटेंगे तो बँटेंगे'** कोई हवा-हवाई बात नहीं है, बल्कि सत्य है। इसे हमारा समाज जितने अच्छे से निपटेगा, राष्ट्र एवं धर्म के रूप में हम उतने ही सशक्त होंगे। शुभम् भवतु।

समरसता गतिविधि के द्वारा समाज परिवर्तन की दिशा में किए गए परिणामकारक प्रयास

मई 2023 में उज्जैन विभाग के आगर जिले के मुल्लूपुरा ग्राम में श्री रामचंद्र मालवीय के पुत्र का विवाह था। जिसके 15 दिन पूर्व उसने एक आवेदन तनोड़िया थाने की पिपलोन चौकी में दिया कि गांव के ही निवासी केसर सिंह, गजराज सिंह व पप्पू सिंह राजपूत इन तीनों ने मेरे बेटे की बारात निकालने एवं घोड़ी चढ़ने को मना किया है और पुलिस ने भी बगैर विषय की जांच किए एफ आई आर दर्ज कर ली। उसी गांव में उन्हीं दिनों एक और घटना घटित हुई थी जिसमें मांगीलाल सूर्यवंशी रामनवमी के जुलूस को लेकर राजपूत बाहुल्य इलाके से निकले जिसमें बड़ी संख्या में अनुसूचित जाति के बंधु थे जो कि जोर-जोर से डीजे बजा रहे थे, अनर्गल नारे लगा रहे थे जिससे विवाद उत्पन्न हो गया और इसे लेकर भी एफ आई आर दर्ज हुई। इसी गांव की तीसरी घटना उन्ही दिनों में एक जलाशय (बड़ा कुआँ) को लेकर हुई जिसमें भी सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित जाति वर्ग में विवाद हुआ। तीनों घटनाओं ने पूरे के पूरे मुल्लूपुरा में एक जातिगत संघर्ष का रूप ले लिया जिसमें सामान्य जाति के नेताओं ने सामान्य जाति के बंधुओं को भड़काना शुरू किया और अनुसूचित जाति के नेताओं ने अनुसूचित जाति के बंधुओं को भड़काना शुरू किया और खाई इतनी बड़ी कर ली कि सोशल मीडिया पर अनर्गल बातें, व्हाट्सएप पर अनर्गल सन्देश, अनर्गल गीत, गालियाँ आदि चलने लगीं जिससे एक बड़ा संघर्ष होने का अंदेशा होने लगा परंतु अपने समरसता कार्यकर्ताओं ने समझदारी से वहाँ के रहनेवाले सभी बंधुओं से बात की, सभी जातियों की छोटी-छोटी बैठकें ली एवं सभी का सकारात्मक मानस बनाया। श्री रामचन्द्र मालवीय के परिवार में भी गए, उस बालक से बात की जिसका विवाह था, अन्य लोगों से बात की और जिन लोगों ने भ्रमित करने का प्रयास किया उन्हें भी समझाया। इस हेतु गांव की सभी समस्याओं के स्थाई समाधान हेतु अनूठी ग्रामसभा का आयोजन गाँव में ही स्थित हनुमानजी के मंदिर में किया। सभी लोगों ने एक दूसरे से अपनी गलतियों की माफी मांगी। मंदिर प्रांगण में स्थानीय संतों के साथ ही अपने समरसता कार्यकर्ताओं के सामने सभी लोगों ने दोनों हाथों को उठाकर संकल्प लिया कि आज के बाद ना तो हम कभी डीजे में अनर्गल गीत बजाएंगे, ना ही सोशल मीडिया पर विवादित पोस्ट डालेंगे। इस गाँव में मंदिर में प्रवेश को लेकर, जलाशय को लेकर अथवा घोड़ी चढ़ने को लेकर किसी प्रकार का कोई विवाद नहीं करेंगे।

सब प्रेमपूर्वक एवं समरसतापूर्ण व्यवहार करेंगे। इस प्रयास की प्रशासन ने, विभिन्न जाति प्रमुखों ने, धर्माचार्यों ने सराहना की तथा इलेक्ट्रॉनिक एवं सोशल मीडिया ने पर्याप्त स्थान देकर भूरि-भूरि प्रशंसा की।

कथाकार समागम नीमच

सामाजिक समरसता के लिए पूज्य कथाकारों ने किया प्रस्ताव पारित - मालवा प्रान्त के नीमच जिले में प्रान्त के विभिन्न स्थानों से चयनित कथाकारों का समागम दिनांक 4 अक्टूबर 2023 को संपन्न हुआ, जिसमें प्रांत से चयनित 64 में से 48 पूज्य कथाकारों ने भाग लिया। कुल 28 जिलों में से 22 जिलों का प्रतिनिधित्व हुआ। इस कार्यक्रम में पूज्य मां ऋतंभरा दीदी का पाथेय एवं क्षेत्र प्रचार प्रमुख श्री कैलाशचंद्रजी का चर्चात्मक मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम में 15 कथाकारों द्वारा समरसता विषय एवं मालवा प्रान्त के चुनौतीपूर्ण बिन्दुओं पर एक प्रस्ताव पारित किया गया। अंत में सभी पूज्य कथाकारों द्वारा एक स्वर में समरसता विषय को लेकर पांच बिन्दुओं पर एक प्रस्ताव पारित किया गया, जो कि निम्नानुसार है-

एक मंदिर

एक श्मशान

एक जलाशय

एक पंगत

अ.जा. परिवारों के मांगलिक कार्यक्रम निर्विघ्न संपन्न हों।

उपरोक्त कार्यक्रम के पश्चात् अनुवर्तन के रूप में पूज्य कथाकारों द्वारा अपनी कथाओं में समरसता विषय को प्राथमिकता देना प्रारंभ कर दिया गया जो समाज परिवर्तन की दिशा में अनुकरणीय प्रयास साबित हुआ।

जायफल के 17 फायदे

रसोई का मसाला जायफल गुणकारी औषधि भी है। आयुर्वेद में जायफल को वात एवं कफ नाशक बताया गया है। आमाशय के लिए उत्तेजक होने से आमाशय में पाचक रस बढ़ता है, जिससे भूख लगती है। आंतों में पहुंचकर वहां से गैस हटाता है। ज्यादा मात्रा में यह मादक प्रभाव करता है। इसका प्रभाव मस्तिष्क पर कपूर के समान होता है, जिससे चक्कर आना, प्रलाप आदि लक्षण प्रकट होते हैं। इससे कई बीमारियों में लाभ मिलता है तथा सौन्दर्य सेबन्धी कई समस्याओं से भी निजात मिलती है।

जानिये कुछ और अद्भुत फायदे

1. सुबह-सुबह खाली पेट आधा चेमच जायफल चाटने से गैस्ट्रिक, सर्दी खांसी की समस्या नहीं सताती है। पेट में दर्द होने पर चार से पांच बूंद जायफल का तेल चीनी के साथ लेने से आराम मिलता है।

2. सर में बहुत तेज दर्द हो रहा हो तो बस जायफल को पानी में घिस कर लगाएं।

3. सर्दी के मौसम के दुष्प्रभाव से बचने के लिए जायफल को थोड़ा सा खुरचिये, चुटकी भर कतरन को मुंह में रखकर चूसते रहिये। यह काम आप पूरे जाड़े भर एक या दो दिन के अंतराल पर करते रहिये। यह शरीर की स्वाभाविक गरमी की रक्षा करता है, इसलिए ठंड के मौसम में इसे जरूर प्रयोग करना चाहिए।

4. आपको किन्हीं कारणों से भूख न लग रही हो तो चुटकी भर जायफल की कतरन चूसिये इससे पाचक रसों की वृद्धि होगी और भूख बढ़ेगी, भोजन भी अच्छे तरीके से पचेगा।

5. दस्त आ रहे हों या पेट दर्द कर रहा हो तो जायफल को भून लीजिये और उसके चार हिस्से कर लीजिये एक हिस्सा मरीज को चूस कर खाने को कह दीजिये। सुबह शाम एक-एक हिस्सा खिलाएं।

6. फालिज का प्रकोप जिन अंगों पर हो उन अंगों पर जायफल को पानी में घिसकर रोज लेप करना चाहिए, दो माह तक ऐसा करने से अंगों में जान आ जाने की संभावना देखी गयी है।

7. प्रसव के बाद अगर कमर दर्द नहीं ख़त्म हो रहा है तो जायफल पानी में घिसकर कमर पे सुबह शाम लगाएं, एक सप्ताह में ही दर्द गायब हो जाएगा।

8. फटी एड़ियों के लिए इसे महीन पीसकर बीवाइयों में भर दीजिये तो 12-15 दिन में ही पैर भर जायेंगे।

9. जायफल के चूर्ण को शहद के साथ खाने से हृदय मज़बूत होता है। पेट भी ठीक रहता है।

10. अगर कान के पीछे कुछ ऐसी गांठ बन गयी हो जो छूने पर दर्द करती हो तो जायफल को पीस कर वहां लेप कीजिए जब तक गाठ ख़त्म न हो जाए, करते रहिये।

11.अगर हैजे के रोगी को बार-बार प्यास लग रही है, तो जायफल को पानी में घिसकर उसे पिला दीजिये। जी मिचलाने की बीमारी भी जायफल को थोड़ा सा घिस कर पानी में मिला कर पीने से नष्ट हो जाती है।

12. इसे थोड़ा सा घिसकर काजल की तरह आँख में लगाने से आँखों की ज्योति बढ़ जाती है और आँख की खुजली और धुंधलापन ख़त्म हो जाता है।

13. यह शक्ति भी बढाता है।

14. जायफल आवाज में सेमोहन भी पैदा करता है।

15. जायफल और काली मिर्च और लाल चन्दन को बराबर मात्रा में लेकर पीसकर चेहरे पर लगाने से चेहरे की चमक बढ़ती है, मुहांसे ख़त्म होते हैं।

16. किसी को अगर बार-बार पेशाब जाना पड़ता है तो उसे जायफल और सफ़ेद मूसली 2-2 ग्राम की मात्र में मिलाकर पानी से निगलवा दीजिये, दिन में एक बार, खाली पेट, 10 दिन लगातार।

17. बच्चों को सर्दी-जुकाम हो जाए तो जायफल का चूर्ण और सोंठ का चूर्ण बराबर मात्रा में लीजिये फिर 3 चुटकी इस मिश्रण को गाय के घी में मिलाकर बच्चे को सुबह शाम चटायें।

गुस्से की दवा

एक गृहस्थ नारी थी। जिसे बात-बात पर गुस्सा आ जाता था। उसकी इस आदत से पूरा परिवार परेशान था। उसकी वजह से परिवार में कलह का माहौल बना रहता था। एक दिन उस महिला के दरवाजे पर एक साधु आया। महिला ने साधु को अपनी समस्या बताई। उसने कहा, महाराज! मुझे बहुत जल्दी गुस्सा आ जाता है। मैं चाहकर भी अपने गुस्से पर नियंत्रण नहीं रख पाती। कोई उपाय बताइए। साधु ने अपने झोले से एक दवा की शीशी निकालकर उसे दी और बताया कि जब भी गुस्सा आए, इसमें से चार बूंद दवा अपनी जीभ पर डाल लेना। 10 मिनट तक दवा को मुंह में ही रखना है। 10 मिनट तक मुंह नहीं खोलना है, नहीं तो दवा असर नहीं करेगी। महिला ने साधु के बताए अनुसार दवा का प्रयोग शुरू किया। सात दिन में ही उसकी गुस्सा करने की आदत छूट गई। सात दिन बाद वह साधु फिर से उसके दरवाजे आया तो महिला उसके पैरों में गिर पड़ी। उसने कहा, महाराज! आपकी दवा से मेरा क्रोध गायब हो गया। अब मुझे गुस्सा नहीं आता और मेरे परिवार में शांति का वातावरण रहता है। तब साधु महाराज ने उसे बताया कि वह कोई दवा नहीं थी। उस शीशी में केवल पानी भरा था। गुस्से का इलाज केवल चुप रहकर ही किया जा सकता है। क्योंकि गुस्से में व्यक्ति उल्टा सीधा बोलता है, जिससे विवाद बढ़ता है। क्रोध का इलाज केवल मौन है।

माई नरबदा हम थारा कंकर

ललित कर्मा 'डिसुर'

माई नरबदा हम थारा कंकर,
घिसइ-घिसइ नऽ बणी गया संकर।

भाग हुया जो वइ नऽ आया,
नइँ तो बठ्या था हम खुनसाया,
पाप कट्या आनऽ पूजणऽ धराया,
दगड़ा सी अवँऽ देव कवाया,
कुचता रयता नइँ तो ढोर-डंगर
माई नरबदा हम थारा कंकर।1।

हमरा माथ पऽ पड़्या थारा पगल्या,
तरी गया हम जसी तरी अहल्या,
थारी किरपा सी हिय भरी आयो,
मन का मन मऽ खोब हरकाया,
अवँऽ तो जपी रह्या थाराज मंतर,
माई नरबदा हम थारा कंकर।2।

अड़ऽ-धड़ऽ गड़ी गया धरम का झंडा,
पूजा करी रह्या नाना-मोठा पंडा,
तीरथ करनऽ घाट पऽ आवऽ,
लोग थारी जय-जयकार लगावऽ,
पाछऽ थारा बण्या हमरा भी मंदर
माई नरबदा हम थारा कंकर।3।

माई नरबदा हम थारा कंकर,
घिसइ-घिसइ नऽ बणी गया संकर।

तुलसी जी और रैदास परिवार की बेटी का विवाह एक ही मंडप में सम्पन्न

अमित राव पवार, देवास

सामाजिक समरसता का एक अनुपम उदाहरण ग्राम पिपलरावा ने प्रस्तुत किया गया।

देवास जिला केंद्र से 60, तह सोनकच्छ से 25 किलोमीटर दूर स्थित लगभग पंद्रह सौ घर, बारह हजार आबादी वाले गांव पिपलरावा में सामाजिक समरसता का एक अनुपम कार्य देखने को मिलता है अवसर था,देवउठनी एकादशी (दिनांक 13 नवंबर 2024, बुधवार) पर एक खास और अनोखा विवाह आयोजन हुआ, जो सामाजिक समरसता का प्रतीक बन गया। इस अवसर पर माता तुलसी जी और रैदास (श्री रविदास समाज) परिवार की बेटी का विवाह एक ही मंडप के नीचे बड़े धूमधाम से संपन्न हुआ। श्री नारायण शिंदेजी जो मजदूरी कर अपने परिवार का पालन-पोषण एवं श्रीमति शांताबाई शिंदे एक ग्रहणी के रूप में परिवार की देखभाल करते हुए अपना जीवन यापन बड़ी खुशी के साथ व्यतीत करते दिखाई देते है। जिनके घर पुत्री होती है वे माता-पिता अपनी पुत्री के अच्छे वर के लिए हमेशा चिंतित रहते है और विवाह किस तरह से होगा ये बात भी हमेशा उनके मन मे रहती है। कुछ इसी प्रकार का विचार ग्राम पिपलरावा के लोगो मे आया अवसर था तुलसी और श्री शालीग्राम के विवाह का जिसमे नगर के लोगो द्वारा आयोजन भव्यता के साथ कर सामूहिक भोज भी किया जाता है। इस बार का यह आयोजन गांव के साथ आसपास के लोगो के लिए एक उदा. प्रस्तुत कर गया। श्री नारायण शिंदे ओर श्रीमति शांताबाई शिंदे की बेटी, कु. निकिता शिंदे वर श्री गोविंद टाटिया, ग्राम बोलाई तेह. गुलाना जिला शाजापुर का विवाह हर किसी को सालों साल याद रहेगा तुलसी विवाह के मंडप में ही इन दोनों का विवाह भी पंडित अरुण त्रिवेदी, नागेश्वर जोशी एवं आनंदीलाल शर्मा द्वारा विधि-विधान से भगवान श्री शालीग्राम व माता तुलसी का विवाह संपन्न कराया साथ ही बालिका निकिता शिंदे का भी विवाह संपन्न हुआ। विवाह में पारंपरिक रीति-रिवाजों का पालन करते हुए, विवाह समारोह को और भी विशेष बनाने के लिए दुल्हन निकिता शिंदे को गांव की ही मानव सेवा समिति द्वारा ग्रहस्ती के जरुरतमंद समान में कुछ चुनिंदा वस्तु ही दी गई दहेज के रूप में कोई भेंट नहीं दी गई,बल्कि उसे सामूहिक भेंट के रूप में एक नेक संदेश दिया गया।

इस विवाह समारोह का आयोजन नगर के माध्यम से किया गया ऐसे आयोजन पूर्व में भी नगर में 5-7 बार हो चुके है किंतु ये पहला अवसर था जब माता तुलसी और भगवान श्री शालीग्राम जी के विवाह मंडप में ही गांव की बालिका का विवाह करवाया गया। जिसमे सामूहिक भोज के साथ यह सुनिश्चित किया कि इस विवाह में पारंपरिक और सामाजिक मूल्य दोनों का सम्मान किया जाए। विवाह के जुलूस की शुरुआत निराला नगर के सिद्धेश्वर महादेव मंदिर से हुई,जहां से भगवान लड्डू गोपाल की बग्घी में सजे सुंदर प्रतिमा के साथ भव्य बारात निकाली गई। इस जुलूस में नगर के प्रमुख मार्गो जैसे सोनकच्छ रोड, इतवारिया बाजार, श्रीराम मार्केट और बस स्टैंड से होते हुए मिठीकुंडी स्थित विवाह स्थल तक पहुंची इस दौरान मार्ग पर जगह-जगह लोगों ने भगवान की पूजा की और फूलों की वर्षा कर आतिशबाजी करके बारात का स्वागत किया। विवाह स्थल पर तुलसी जी के पिता ने भगवान के चरण पखारकर बारात का स्वागत किया और समारोह को विशेष रूप से आध्यात्मिक और पारिवारिक रंग में रंग दिया यह हमारी धार्मिक परंपराओ के साथ सामाजिक समरसता का एक अनुपम उदा. है । आयोजकों ने सामूहिक भोज के दौरान पर्यावरण संरक्षण व प्लास्टिक मुक्त का संदेश देने के लिए स्टील की थालियों का इस्तेमाल किया, जिससे ना केवल पर्यावरण की रक्षा, बल्कि समाज एकजुटता का भी प्रतीक बना।

इंदौर मे उमड़ा हिंदुओं का महासागर

बांग्लादेशी हिंदुओं के लिए उठे लाखों हाथ

जय श्रीराम और हर हर महादेव के उद्घोष के साथ लाखों हिंदुओं ने अपना आक्रोश व्यक्त किया और रैली निकाल कर प्रशासन को ज्ञापन दिया।

इसके पूर्व मंचीय सभा मे कई पूजनीय संत भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर श्री योगी चैतन्यजी महाराज ने अपने ओजस्वी उद्गार व्यक्त किए और शौर्य के मंत्र दिए। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश मे हिंदुओं के साथ हो रहा अत्याचार बिल्कुल भी स्वीकार्य नहीं है। संत श्री दादुगुरु ने इस विषय मे सरकार से आग्रह किया कि हिंदू हितों के लिए वे बांग्लादेश पर अपना दबाव बनाएं । मातृशक्ति का प्रतिनिधित्व करती सुश्री अरुंधती चंदेल ने कहा की बांग्लादेश की स्त्रियों पर होते अत्याचार को देख कर हिंदू समाज चुप नहीं बैठ सकता। जैन संत श्री राजेश मुनी जी महाराज ने भी संबोधित किया और कहा की सनातन को अपनी शक्ति बतानी होगी।

मुख्य वक्ता श्री खगेन्द्र जी भार्गव ने कहा की हिंदुओं की एकजुटता और जागृति के कारण ही आज वैश्विक समाज का ध्यान बांग्लादेश की घटनाओं पर गया है। उन्होंने कहा की सन इकहत्तर की तरह आज भी हमारी सेना बांग्लादेश मे कोई भी ऑपरेशन करने के लिए सक्षम है। म्यांमार के सन्यासी विराथू का उदाहरण दे कर उन्होंने हिंदुओं को **शस्त्र मेव जयते** का सूत्र दिया। उपस्थित जनसमुदाय से आग्रह भी किया कि अपने इस आक्रोश को सोशल मीडिया के द्वारा देश और दुनिया के कोने कोने मे पहुंचाएं।

मंदसौर के ग्राम भगोर ने प्रस्तुत किया समरसता का सुन्दर उदाहरण

विधर्मी और विरोधियों ने हिन्दू समाज में विखंडन के अनेकों प्रयास किये, किन्तु जागृत हिन्दू चेतना उनके इन दुर्लक्ष्यों को सफल नहीं होने दे सकती। समाज जागृत हो रहा है और अपने विरुद्ध किये जा रहे बांटने के षड्यंत्रों को समझ भी रहा है।

इसी का सुन्दर उदहारण मंदसौर के भागोर ग्राम में देखने को मिला है यहाँ एक अनुसूचित जाति के परिवार में मृत्यु का दुखद अवसर आया। उनकी पीड़ा को अपना दुःख समझ उस परिवार के साथ पूरा हिन्दू समाज आ जुटा। पगड़ी की रस्म के समय सभी जाति वर्ग के बंधू इकट्ठा हुए और पगड़ी पहनाई। बाद में सभी ने साथ में भोजन भी ग्रहण किया। इस अवसर पर संत समाज भी उपस्थित था।

भगोर के सन्दर्भ में यह घटना अत्यंत महत्वपूर्ण है। ग्रामवासियों ने न केवल समाज में समरसता का अमृत प्रवाहित किया बल्कि सम्पूर्ण हिन्दुओं को एकजुटता का सन्देश भी दिया।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार के विरोध में मालवा प्रांत के सभी जिलों में सकल हिंदू समाज द्वारा विरोध प्रदर्शन, ज्ञापन एवं जन आक्रोश रैली का आयोजन किया

समरसता का संगम

महाकुंभ प्रयागराज 2025

फरवरी माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. 02 विनायकी चतुर्थी व्रत
ता. 03 कवि सूर्यकांत निराला जयंती
ता. 10 प्रदोष व्रत
ता. 11 शहीद तिलका मांझी जयंती
ता. 19 गुरू गोलवलकर जयंती
ता. 26 वीर सावरकर पुण्यतिथि

बुक-पोस्ट

जाग्रत मालवा

प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11डी, पोलोग्राउण्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं अर्चना भवन, 76 रामबाग, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731-3551341